THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. M. POONACHA): (a) Yes.

(b) According to the findings of the Additional Commissioner of Railway Safety, the accident was due to the failure of railway staff.

---

12 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

TEARGASSING OF DEMONSTRATORS AT SOVIET INFORMATION CENTRE IN DELHI

श्री अटल बिहारी वाजपेयी (बलरामपुर) : अध्यक्ष महोदय, में अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर गृह-कार्य मंत्री महोदय का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :

"दिल्ली में 21 जुलाई, 1968 को सोवियत इनफर्मेशन सैंटर के सामने हुई अनेक अभद्र घटनायें, पुलिस द्वारा शन्तिमय प्रदर्शनकारियों पर अश्रु-गैस छोड़ना और लाठी चार्ज करना, महिलाओं को पीटा जाना और पत्र संवाददाताओं के साथ दुर्व्यवहार"।

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN): Mr. Speaker Sir, on 21st July, a procession was taken out in defiance of the prohibitory orders promulgated under section 144, Cr. P.C.....

SHRI RANGA (Srikakulam): Why did they pass those orders at all?

SHRI Y. B. CHAVAN: ....in Connaught Circus, New Delhi and certain adjoining areas. When the processionists attempted to break through the police cordon and enter Barakhama Road, the Magistrate on duty warned them through loudspeaker to disperse. The warning produced no effect and so it became necessary to use tear-gas smoke to disperse the crowd. 435 persons were also arrested for defiance of the prohibitory orders and were produced before a magistrate on the same day for trial. On pleading guilty they were convicted under section 188 IPC and sentenced to imprisonment till the rising of the court. Reports received by me do not show that women demonstrators were manhandled or that the police misbehaved with the press correspondents.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, ऐसा दिखाई देता है कि सरकार ने लोकतांत्रिक ढांचे में लोकतंत्र के तरीके से शन्तिपूर्ण प्रदर्शन करने के महत्व को अभी तक समझा नहीं है । सोवियत संघ ने पाकिस्तान को हथियार देने का जो फैसला किया उसके विरुद्ध जनता में रोष और असन्तोष होगा स्वाभाविक है और रोष शान्तिपूर्ण तरीके से प्रकट हो यह भी लोकतंत्र का तकाजा है । जब भारतीय जगसंघ ने निर्णय किया कि सोवियत सूचना केन्द्र के सामने हम शांतिपूर्ण प्रदर्शन करेंगे और उसकी अनुमति दिल्ली प्रशासन से मांगी तो अनुमति देने के बजाय दफा 144 का क्षेत्र बढ़ा दिया गया और जलूस को एक तरह से पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया गया । मैं जानना चाहता हूं कि जब अमरीका ने पाकिस्तान को हथियार दिये थे तब क्या इस तरह का कोई प्रतिबन्ध लगाया गया था । हम अमरीकी दूतावास के सामने प्रदर्शन करने गए थे और इस तरह प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया था । क्या प्रतिबन्ध लगाने का अर्थ यह है कि इस मामले में भी सरकार सोवियत रूस को खुद करना चाहती है और दिखाना चाहती है कि आपके साथ अपनी मित्रता बनाए रखने के लिए हम अपनी जनता के लोकतांत्रिक अधिकारों को भी कुचलने के लिए तैयार हैं ।

दूसरी बात और है । गृह मंत्री महोदय ने कहा है कि उन्हें इस बात की कोई सूचना नहीं है कि महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया गया या पत्रकारों के साथ,

[श्री अटल बिहारी वाजपेयी]

फोटोग्राफरों के साथ पुलिस ने ज्यादती की। मैं जानना चाहता हूं कि उनकी सूचनाओं का आधार क्या है ? मेरे सामने 22 जुलाई टाइम्ज आफ इंडिया का है और मैं समझता हूं कि गृह मंत्रालय में इस बात का इंतजाम है कि जो प्रश्न संसद में आते हैं कम से कम उनके सम्बन्ध की कतरनें गृह मंत्री महोदय के सामने रखी जाएं। मैं उसका एक अंश आपको पढ़ कर सुनाना चाहता हूं :

"What happened outside the USSR Information Centre on Barakhamba Road at the time of the Jana Sangh demonstration on Sunday is indeed worth a probe—by a psychologist or by the police themselves. Without any visible provocation, a DIG on duty ordered his men to 'throw out' the Press reporters, using rough language which does not behave a senior official of his rank.

"The policemen shoved off some of the reporters in spite of a magistrate's request not to do so. When a reporter asked him whether the police were not defying his order, the magistrate remarked helplessly: 'Don't ask such embarrassing questions".

"When would the police realise that the pressmen are not there for fun or personal pleasure? They are, like the policemen themselves, on duty. So why should the police interfere unnecessarily unless they have something to hide?"

मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री महोदय के ध्यान में यह खबर नहीं आई। क्या उन्होंने इसकी जांच की और यदि की तो किस के द्वारा जांच की ? टाइम्ज आफ़ इंडिया में रिपोर्ट दी गई है कि महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार किया गया और जब जन संघ के एक कार्यकर्ता ने पुलिस वालों को रोका तो उस जन संघ के कार्यकर्ता पर पुलिस द्वारा लाठियां बरसाई गई, उसको पीटा गया। मैं जानना चाहता हूं कि क्या मंत्री महोदय सारे मामले की एक उच्चस्तर पर जांच करने के लिए तैयार हैं जिससे जो तथ्य हैं वे सामने आ सकें और दिल्ली पुलिस की ज्यादतियां बेनकाब हो सकें ?

SHRI Y. B. CHAVAN: As I have understood him, the hon. Member has raised two points. One is about Government's political intentions. I can tell him that there were no political intentions at all in this matter. The question of the merits of this issue as such were discussed in this House and Government have their own particular approach to it which they have explained to the House. There is no question of any political considerations in this. It was purely consideration of police administration, of maintenance of law and order, because our experience has been—it is also the experience of the hon. Member—that in so-called peaceful demonstrations, when they actually start, nobody is there to control them and they become violent. When I made this sort of statement here, he did not like it, because the leaders who proclaim their intention of carrying on a peaceful demonstration always disappear when it turns into a violent demonstration.

Here was a crowd of about 3,000 people. My information is that it got into some sort of frenzy. If it were not controlled at that time, something undesirable would have happened.

श्री यज्ञदत्त शर्मा (अमृतसर): मैं वहां पर मौजूद था और मैं..... (इंटरप्शंज)

SHRI Y. B. CHAVAN: He was a part of the demonstrators. I am not prepared to accept his version.

श्री यज्ञदत्त शर्मा: आप गलत कह रहे हैं।

श्री हरदयाल देवगुण (पूर्व दिल्ली): हम भी आपके वर्णन को मानने के लिए तैयार नहीं हैं।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : इससे कोई इन्कार नहीं कर सकता है कि प्रदर्शन शन्तिपूर्ण था ।

SHRI Y. B. CHAVAN: Does he want me to reply or does he want to say something more?

SHRI NATH PAI (Rajapur): They were on the spot; the hon. Minister was not.

SHRI Y. B. CHAVAN: As far as the women demonstrators were concerned, we had anticipated the participation of women demonstrators, and kept women police present (*Interruptions*). So there was no question of any women demonstrators being manhandled.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Have you seen the press report?

SHRI Y. B. CHAVAN: It is not merely a question of the press report.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Pressmen were present on the spot.

SHRI Y. B. CHAVAN: I have made enquiries. My facts are....

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: They are wrong. (*Interruptions*).

श्री हुकम चन्द कछवाय (उज्जैन) : मंत्री महोदय को गलत जानकारी दी गई है । उन को गुमराह किया गया है ।

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अध्यक्ष महोदय, में यह जानना चाहता हूं कि गृह मंत्री को यह जानकारी कहां से मिली है । मैं पार्लियामेंट का मेम्बर हूं । गृह मंत्री इस बात को स्वीकार करेंगे कि ऐसे महत्वपूर्ण मामलों पर मैं गलतबयानी नहीं करूंगा । जब औरतों को मर्द पुलिस वालों ने घसीटा, तो पार्लियामेंट के पांच मेम्बर मौके पर मौजूद थे और मंत्री महोदय कहते हैं कि ऐसा नहीं किया गया है । आखिर पुलिस वाले गलती कर सकते है और मंत्री महोदय को गलती मानने के लिए तैयार रहना चाहिए ।

SHRI RANGA: On a point of order. Is it open to the Home Minister, whatever might have been the provocation,......

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: There was no provocation.

SHRI RANGA:....to challenge one of our members here, saying, "You were one of the people who were present, I am not prepared to accept your statement".

SHRI Y. B. CHAVAN: Am I under compulsion to accept his version?

MR. SPEAKER: Order, order. Both of them have expressed their opinions.

SHRI HARDAYAL DEVGUN: He is insulting Parliament.

श्री हुकम चन्द कछवाय : मंत्री महोदय तो वहां पर नहीं थे, जब कि माननीय सदस्य थे, लेकिन मंत्री महोदय कहते हैं कि वह गलतबयानी करते हैं ।

MR. SPEAKER: After all, the opinions may be different, but I am not here to give judgment.

SHRI RANGA: It was not right for him to say so.

MR. SPEAKER: The hon. Members have one version, and the hon. Minister has got a different version. There is difference of opinion about the facts. Women policemen were there, that is what the Home Minister has said, but the leader of the Jana Sangh has said that it is the men policemen that mishandled the ladies. So, about the facts there is slight difference of opinion. Therefore, we shall see how best the Home Minister or Mr. Vajpayee can get the information, how best it can be verified.

SHRI RANGA: The point I raised has not been replied to at all.

MR. SPEAKER: He raised about propriety. I cannot answer that.

श्री अटल बिहारी वाजपेयी : अभी मैंने पढ़ कर सुनाया है कि प्रैस वालों के साथ दुर्व्यवहार किया गया है । इस बारे में गृह मंत्री महोदय की क्या प्रतिक्रिया है ? हम पार्लियामेंट के मेम्बर वहां पर मौजूद थे। वे गलत कह रहे हैं। जो प्रैस वाले वहां मौजूद थे, वे भी गलत कह रहे हैं। और खाली गृह मंत्री को खबर देने वाले सच कह रहे हैं ? यह गृह मंत्री का तरीका है पार्लियामेंट के सामने बयान देने का ।

श्री हरदयाल देवगुण : दिल्ली में पुलिस स्टेट बना रखी है ।

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, जितने भी समाचारपत्र दिल्ली से निकलते हैं, उन में से किसी ने भी यह नहीं लिखा कि किसी प्रकार का प्रोवोकेशन था। दिल्ली पुलिस के लिए यह कोई पहला मौका नहीं है। दिल्ली पुलिस की यह आदत है कि वह इस प्रकार की मिस-हैंडलिंग करती है और लोगों को तंग करती है ।

मैं आप की इजाज़त से स्टेट्समैन को क्वोट करना चाहता हूं :

"The tear gas squad of the Delhi police seemed to enjoy firing shells. They continued firing them for at least ten minutes after the subdivisional magistrate of the area had asked them to stop."

डी० आई० जी०, पुलिस, श्री कृपाल सिंह और दूसरे पुलिस वालों ने प्रैस रिपोर्टज़ की इनसल्ट की और उन को धक्का दिया। मेट्रोपालिटन कौंसिल में मेरी पार्टी के चीफ़ व्हिप, श्री खुराना, ने आप को भी एक पत्र लिखा है । उस की कापी मेरे पास है । वह लिखते हैं कि वहां पर एक मैजिस्ट्रेट, श्री उमेश सहगल, ने उन्हें कहा कि तुम गिरफ्तार हो । उन्होने कहा कि अगर आप पुलिस को कहें कि वह मुझे गिरफ्तार करे, तो मुझे कोई एतराज नहीं है । वह अकेले ही थे । उन्होंने कहा कि मैं तुम्हें गिरफ्तार करता हूं । जहां मैजिस्ट्रेट ही पुलिस का काम करने लग जाये, वहां क्या हालत होगी ? उन्होंने मैजिस्ट्रेट से कहा कि आप मुझे गिरफ्तार नहीं कर सकते, आप मुझे गिरफ्तार करवा सकते हैं । इस पर उन्होंने पुलिस को कहा कि इसको लाठी मारो। उन पर लाठी मारी गई। जब मेट्रोपालिटन कौंसिल का एक और मेम्बर उन को बचाने के लिए गया, तो उस को भी लाठी मारी गई। तीन चार लोगों का वहां पर सिर फोड़ा गया । तिहाड़ जेल में मेडिकल सुपरिन्टेडेंट को यह सब बताया गया । यह बात रिकार्ड में है कि उन को लाठियां पड़ी हैं । मैं मंत्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि कौन सा प्रोवोकेशन था। कोई प्रोवोकेशन नहीं था।

जब हम ने जलूस निकालने की इजाजत मांगी, तो पार्लियामेंट हाउस के पास दफा 144 लगाई गई । दो दिन के बाद कनाट प्लेस में भी दफा 144 लगा दी गई । और दो दिन के बाद अजमेरी गेट तक दफ़ा 144 लगा दी गई । जब मैंने डी० आई० जी० साहब से पूछा कि आप इतने नाराज़ क्यों हैं, तो वह कहने लगे कि आप पुलिस के प्लान के मुताबिक जलूस क्यों नहीं निकालते, आप ने रास्ता क्यों बदल दिया । हम ने कहा कि हम पुलिस के प्लान से नहीं चलेंगे हमारा अपना प्लान है ।

मैंने डी० आई० जी० को कहा कि आप लारी लगवाइये, हमें ऐरेस्ट कीजिए, हम उस में बैठ जाते हैं । हम ने एक एक कर के लोगो को लारी में बिठाया । टीयर गैस के बम ट्रक में बैठे हुए, गिरफ्तार किये हुए लोगों पर फैंके गये । मैं चाहता हूं कि गृह मंत्री महोदय इस की एन्क्वायरी करें कि क्या हम ने लोगों को पुलिस की गाड़ी में बिठाया या नहीं, हम ने उन को गिरफ्तार करवाया या नहीं, हम ने पुलिस की मदद की या नहीं ।

मैं यह जानना चाहता हूं कि वह कौन-सा प्रोवोकेशन था, जिस के कारण सरकार ने दफा 144 तीन बार बदली। क्या यह डेमोक्रेसी के खिलाफ नहीं है ?

सरकार ने रूसी सूचना केन्द्र को बचाने के लिए हम पर अमरीका के बने हुए टीयर गैस बम छोड़े -रूस को बचाने के लिए अमरीकी बम हिन्दुस्तानियों पर इस्तेमाल किये। क्या सरकार ने इस बात की कोई गारण्टी नहीं ली थी कि ये बम हिन्दुस्तान के शहरियों पर इस्तेमाल नहीं होंगे ?

रूस को खुश करने के लिए सरकार ने यह सब कुछ किया। क्या सरकार ने इस बात की कोई व्यवस्था की है कि लोग शान्तिपूर्वक प्रदर्शन कर के अपनी बात पार्लियामेंट के कानों तक पहुंचा सकें ? या क्या उस ने पर्मानेंटली, बारह महीने, दफा 144 लगा रखने का फैसला कर रखा है ? जब हम ने ये तथ्य सरकार के सामने रखे हैं और पुलिस का भी एक अपना वर्शन है तो क्या गृह मंत्री महोदय इस बारे में एन्क्वायरी करायेंगे ?

SHRI Y. B. CHAVAN: As far as specific complaints are concerned, we shall certainly look into them. For example Shri Khurana had written to me making certain allegations. I shall have to look into them. I do not say that I am not going to look into them; I have not taken that position.

When I make a statement, I have to get facts from the people who handle the situation. They were not the enemies of the demonstrators; they were the servants of the Government and of the country; they were doing a certain duty which was not a very pleasant duty. But they had to do it. The question whether 144 was necessary or not is a different matter. That was the view of the local administration; that was also my view and I am prepared to take the responsibility; promulgation of 144 was necessary; I have no doubt about it in my mind. If there are certain specific complaints, I shall look into them.

श्री कंवर लाल गुप्त : हम ने कुछ तथ्य सरकार के सामने रखे हैं। पुलिस का एक अपना वर्शन है। तो फिर इस बारे में एन्क्वायरी क्यों नहीं कराते हैं ?

SHRI D. C. SHARMA (Gurdaspur): I have also been reading papers. So far as I know—I hope the hon. Home Minister will throw some light on this problem—the demonstrators were playing hide and seek with the police authorities and the magisterial authorities. They were changing their route very often and therefore perhaps the necessity arose to promulgate section 144 of Cr. P.C. here and again the same section at some other places. I want to have some light thrown by the hon. Home Minister on this point.

Secondly, the demonstration has been described as violent. I want to ask the Home Minister what specific acts of violence were committed by these good ladies of the Jan Sangh party and these hon. members of the press whose photographic cameras and other things were snatched. I want to have specific instances of violence committed by these persons, which justifies the action that was taken by the police at that time and afterwards.

SHRI Y. B. CHAVAN: He has mentioned two points. The first is that there was hide and seek between the police and the demonstrators. (*Interruption*). I am not mentioning it: he mentioned it and I am merely confirming that fact. Therefore, where there was the possibility of hide and seek, in those areas, section 144 had to be extended. This point also has to be made very clear. I must say that some of the demonstrators did co-operate with the police for which I must thank them.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: You make an enquiry.

SHRI Y. B. CHAVAN: Where there was co-operation given, I must thank them here also. But at that one point where the tear-gas was used . . .

SHRI D. C. SHARMA: I mentioned about violence being committed by the lady demonstrators of the Jan Sangh party.

SHRI Y. B. CHAVAN: I have repudiated that thing.

SHRI D. C. SHARMA: About the members of the fourth estate; the press people.

SHRI Y. B. CHAVAN: I thought he is a professor; he is now trying to be a lawyer; he is putting me a loaded question. I have never said that the police had resorted to any violence. It is my case; it is the information on which I am making the statement here. The women were not manhandled as far as my information goes and as far as my report goes. So, I do not need to answer that.

श्री देवेन सेन (आसनसोल): मैं पूछना चाहता हूं कि क्योंकि यहां पर घटना के बारे में दो तरह की रिपोर्ट है हमारे पार्लियामेंट के मेम्बर कहते हैं कि पुलिस की तरफ से औरतों पर और प्रेस रिपोर्टरों पर अत्याचार हुआ और होम मिनिस्टर कहते हैं कि नहीं हुआ तो मैं मांग करता हूं कि एक जांच कमेटी बिठायी जाय जांच करने के लिए कि वहां पर क्या हुआ और जो कुसूरवार पाया जाय उस को सजा दी जाय। मेरा दूसरा प्वाइंट है कि सरकार की तरफ से कोई नीति अपनायी गई या नहीं कि डिमान्स्ट्रेशन में जो रहेंगे औरतें या प्रेस रिपोर्टर्स रहेंगे उन के साथ क्या बर्त्ताव करना है ? तीसरा मेरा क्वेश्चन है कि होम मिनिस्टर को जो खबर मिली वह किस से मिली ? क्या पुलिस डिपार्टमेंट से मिली ? अगर पुलिस से मिली तो पुलिस डिपार्टमेंट की खबर को हम लोग सही कैसे मान सकते हैं ?

SHRI Y. B. CHAVAN: As far as the policy about the women demonstrators and the press is concerned, I think the press is given all the facilities. They need to be given facilities to see what is happening. On that ground I have no doubt. As far as the women demonstrators are concernedd, it is always the policy to keep women constables present.

SHRI KANWAR LAL GUPTA: At that place there was no woman constable, on the Barakhamba Road. The press photographers said they had cards; but they were not allowed.

SHRI Y. B. CHAVAN: I have made enquiries about it; I have also seen some photographs where the women demonstrators were present and where the women police were trying to persuade them and talk to them. I have tried to get my information about this matter. I am convinced that the women police were present on the spot. Therefore, as far as that part is concerned, I have no doubt about it.

The other thing he asked was about the inquiry. I do not propose to have any magisterial inquiry. I am prepared to go into any specific complaints.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: What does he mean by "specific complaints"? We have made specific complaints. Let him promise that he is going to look into those complaints.

MR. SPEAKER: He did say that. Only he is not prepared to have any magisterial inquiry.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: We want only a high power inquiry.

श्री रामावतार शर्मा (ग्वालियर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आप के द्वारा मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि यह जो जनसंघ वाले प्रदर्शन करने जा रहे थे यह तो पहले से ही निश्चित था और आप को तो छोड़िए, हम लोगों को भी एक सप्ताह पहले ही यह मालूम था तो क्या एक दिन पहले कोई और प्रबन्ध नहीं किया जा सकता था ? यह लाठी चार्ज और अश्रु गैस के गले छोड़ने की नौबत क्यों आने दी गई ? ऐसा प्रतीत होता है कि हमारा गृह मंत्रालय और जनसंघ दोनों मिले हुए हैं और वह चाहते हैं कि इनका प्रदर्शन कामयाब हो।

दूसरी बात मैं यह जानना चाहूंगा कि जो अश्रु गैस के गोले छोड़े गए थे क्या उन पर मेड इन यू० एस० ए० लिखा हुआ था ?

तीसरी बात कि 875 प्रदर्शनकारी गिरफ्तार किए और कुल 435 को कोर्ट के सामने पेश किया गया । बाकी को जो जेल के बाहर धूप और वर्षा में वहीं बैठाये रखे गए उस का क्या कारण था ?

चौथी बात यह कि जब कि उन को आप ने वहां दिन में 11 बजे के लगभग गिरफ्तार किया और फैसला होने तक वहां बैठाए रखा, तो उन के भोजन इत्यादि का क्या प्रबन्ध किया गया या उन को ऐसे ही छोड़ दिया गया ?

SHRI Y. B. CHAVAN: Sir, according to my report about 435 persons were arrested and they were produced before the court. As far as cooperation between Jan Sangh and the Ministry of Home Affairs is concerned, I am prepared to take cooperation from Jan Sangh and from the hon. Member also. In doing my lawful duty it is my duty to take the cooperation of every party, every Member and every citizen. (*Interruption*).

श्री रामावतार शर्मा : मेरे पूरे प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया गया ।

MR. SPEAKER: He has given all the information he has. We have spent about half-an-hour on this. The information that the Home Minister has got is different from the information that the Leader of the Jan Sangh Party has got. But the Home Minister has promised that he will look into it wherever there is something to be looked into. That way I hope the differences will be resolved and we will get the correct information.

SOME HON. MEMBERS *rose*—

12.28 hrs.

BUSINESS OF THE HOUSE

MR. SPEAKER: I think Shri Madhu Limaye wants to say something about the privilege motion.

SHRI MADHU LIMAYE (Monghyr): Yes. मुरारजी भाई के खिलाफ है मेरा प्रस्ताव ।

MR. SPEAKER: I discussed it with you, Dr. Ranen Sen and other hon. Members also. I have not taken any decision till now. I would have taken a decision today, but since you have written to me I would like to have a word with Dr. Ram Subhag Singh also and then take a decision. Tomorrow I will let you know what decision I take.

SOME HON. MEMBERS *rose*—

MR. SPEAKER: Order, order. If everybody tries to get up and bring in matters which are not on the Agenda where will it lead us. I would request you to enlighten me on this point. If hon. Members try to get up and raise some point about some subject which I do not know, what is the use? I will not be in a position to reply and I do not want to reply also. Could you not bring it to my notice a little earlier so that I myself can study it and either admit it and include it in the Agenda or convince you that it cannot be included. Today we are meeting at 4.00 P.M. in the Business Advisory Committee. Let me see whether I would be able to satisfy you or be convinced by you.

श्री मधु लिमये : एक प्रार्थना तो सुन लीजिए । प्रिविलेज के बारे में नहीं, बिहार में राष्ट्रपति शासन है । वहां अराजपत्रित कर्मचारियों की हड़ताल है उस की चर्चा कहां होगी ?

MR. SPEAKER: Let it be any business, whether it relates to Bihar, Bengal or Uttar Pradesh.